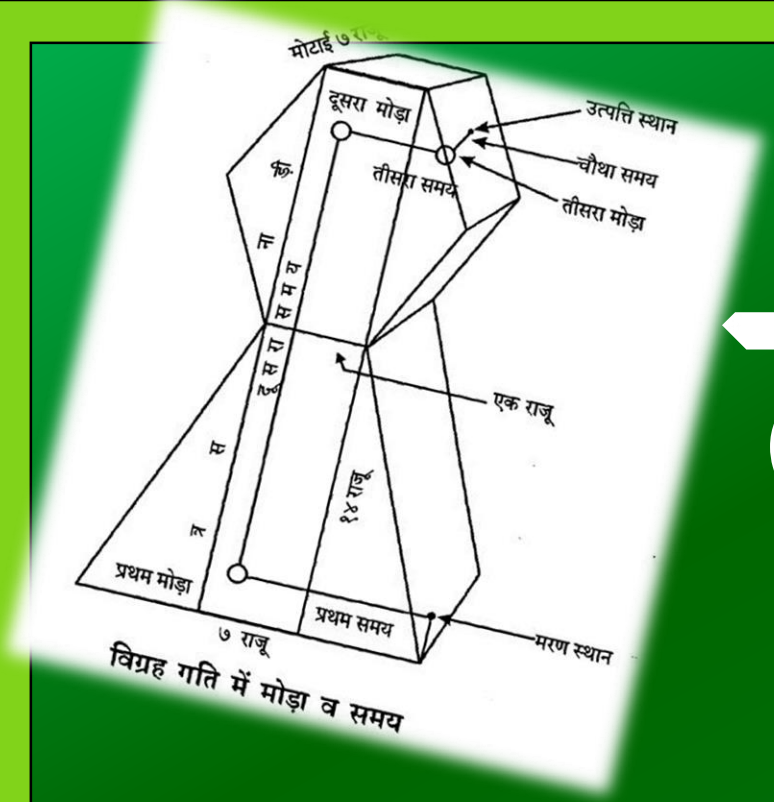

विग्रह गति में मोड़ा व समय

तत्त्वार्थ सूत्र

द्वितीय अध्याय

Presentation Developed By: श्रीमति सारिका छाबड़ा

☸उपयोगो लक्षणम्॥8॥

☸जीव का लक्षण उपयोग है ।

☸स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः॥9॥

☸वह 2 और 8 प्रकार का है ।

लक्षण किसे कहते हैं?

अनेक मिली हुई वस्तुओं में से → किसी एक वस्तु को पृथक करने वाले → हेतु को लक्षण कहते हैं।

लक्ष्य और अलक्ष्य

लक्ष्य

- जिसका लक्षण किया जाय उसे लक्ष्य कहते हैं | उदा.- चावल

अलक्ष्य

- लक्ष्य से भिन्न सभी पदार्थ अलक्ष्य कहलाते हैं | उदा. – दाल, मक्का आदि

लक्ष्य

अलक्ष्य

लक्ष्य

उदाहरण

लक्ष्य –जीव	लक्ष्य – पुद्गल	लक्ष्य – शक्कर
लक्षण – चेतना	लक्षण – स्पर्श,रसादि	लक्षण - मिठास

लक्षण

आत्मभूत

वस्तु के स्वरूप में मिला हुआ हो

जैसे – अग्नि की उष्णता

अनात्मभूत

वस्तु से मिला हुआ न हो, उससे पृथक हो

जैसे – डंडे वाले पुरुष का दंड

लक्षणाभास

जो यथार्थ लक्षण नहीं होने पर भी लक्षण के समान प्रतिभासित होता है, उसे लक्षणाभास कहते हैं |

सदोष लक्षण को लक्षणाभास् कहते हैं |

लक्षणाभास
अव्याप्ति
अतिव्याप्ति
असंभव

अव्याप्ति लक्षणाभास

जो लक्षण लक्ष्य के एकदेश में रहता है, सम्पूर्ण लक्ष्यभूत पदार्थ में नहीं रहता है उसे अव्याप्ति लक्षणाभास् कहते हैं |

जैसे – गाय का लक्षण सफेद या पशु का लक्षण सींग

अतिव्याप्ति लक्षणाभास

जो लक्षण – लक्ष्य और अलक्ष्य दोनों में पाया जाय उसे अतिव्याप्ति लक्षणाभास कहते हैं |

जैसे गाय का लक्षण सींग

असंभव लक्षणाभास

लक्ष्य में लक्षण की असंभवता को असंभव दोष कहे हैं |

मनुष्य का लक्षण सींग, जीव का लक्षण रुप

दोष बताइये

- जिसमे केवलज्ञान हो उसे जीव कहते हैं ।
- जिसमे मति-श्रुत ज्ञान हो उसे जीव कहते हैं ।
- जो अमुर्तिक हो उसे जीव कहते हैं ।
- पुद्गल का लक्षण ज्ञान है ।
- जीव का लक्षण उपयोग है ।

उपयोग

ज्ञान - दर्शन का व्यापार/ कार्य

चेतन्य के साथ संबंध रखने वाले जीव का परिणाम

चेतन	चैतन्य	उपयोग
जीव द्रव्य	गुण	पर्याय
लक्ष्य	ज्ञान दर्शन	लक्षण

उपयोग

जीव का जो भाव वस्तु को ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त होता है उसे उपयोग कहते हैं

यह आत्मा का आत्मभूत लक्षण हैं

प्र.- उपयोग अस्थिर होने से जीव का लक्षण नहीं बन सकता ?

उ.- उपयोग सामान्य को ग्रहण करने पर वह जीव का लक्षण बन सकता है

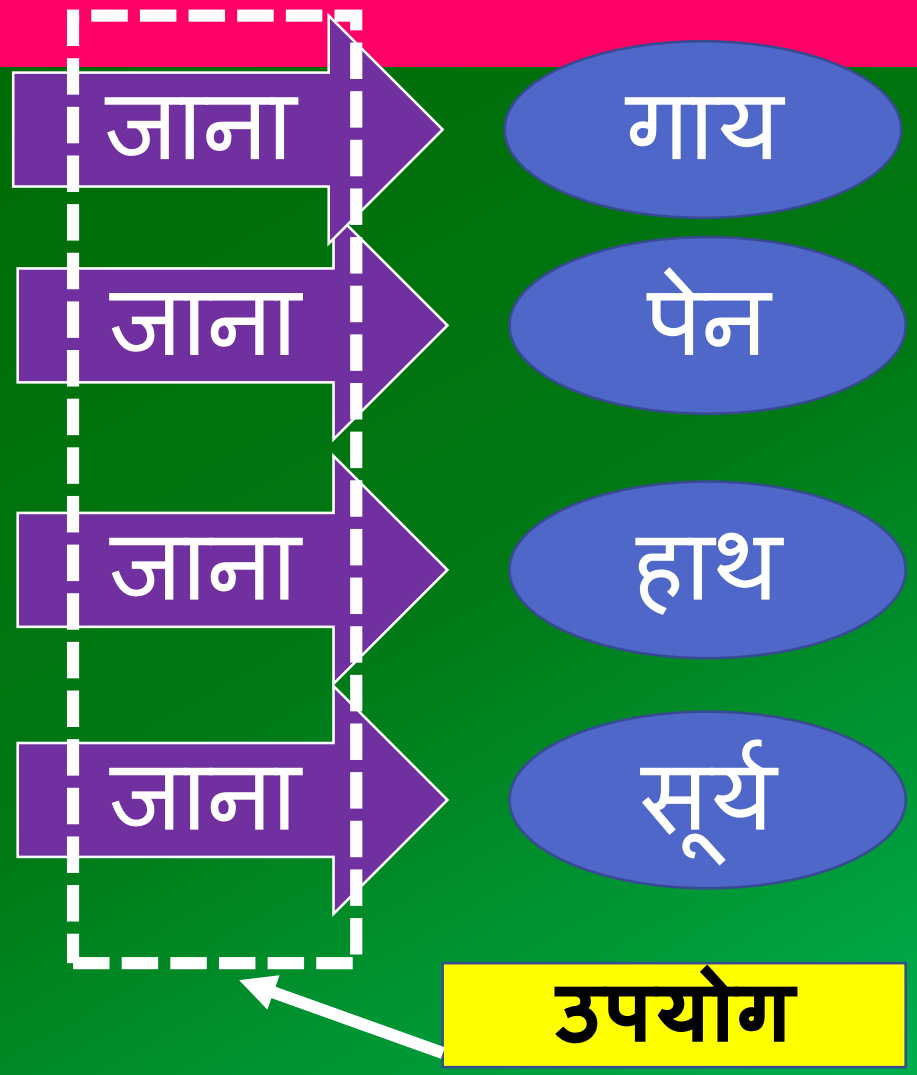

उपयोग

ज्ञानोपयोग

साकार

अंतर्मुहूर्त काल तक मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्याय ज्ञान अपने-अपने विषय को विशेष रूप से ग्रहण करते हैं

दर्शनोपयोग

निराकार

इन्द्रिय, मन और अवधि द्वारा अविशेषरूप से पदार्थ का जो सामान्य ग्रहण

साकार और निराकार

- यहाँ आकार से मतलब लम्बाई चौड़ाई नहीं है
- बल्कि जैसा पदार्थ होता है वैसा ज्ञान में ज्ञात होना आकार है ।
- निराकार में एक पदार्थ दूसरे पदार्थ से भिन्न है ऐसा नहीं जाना जाता, जबकि साकार में विशेषता सहित पदार्थ की भिन्नता ज्ञात होती है ।

ज्ञानोपयोग

- 5 सम्यग्ज्ञान
- 3 मिथ्याज्ञान

दर्शनोपयोग

- चक्षुदर्शन
- अचक्षुदर्शन
- अवधिदर्शन
- कवलदर्शन

विशेष

छद्मस्थ के दर्शानोपयोग के पश्चात ज्ञानोपयोग होता है

किन्तु केवली भगवान के दर्शन और ज्ञानोपयोग दोनों साथ में होते हैं |

☸संसारिणो मुक्ताश्च॥10॥

☸जीव संसारी और मुक्त 2 प्रकार का है ।

☸समनस्काऽमनस्काः॥11॥

☸संसारी जीव मन सहित और मन रहित होते हैं

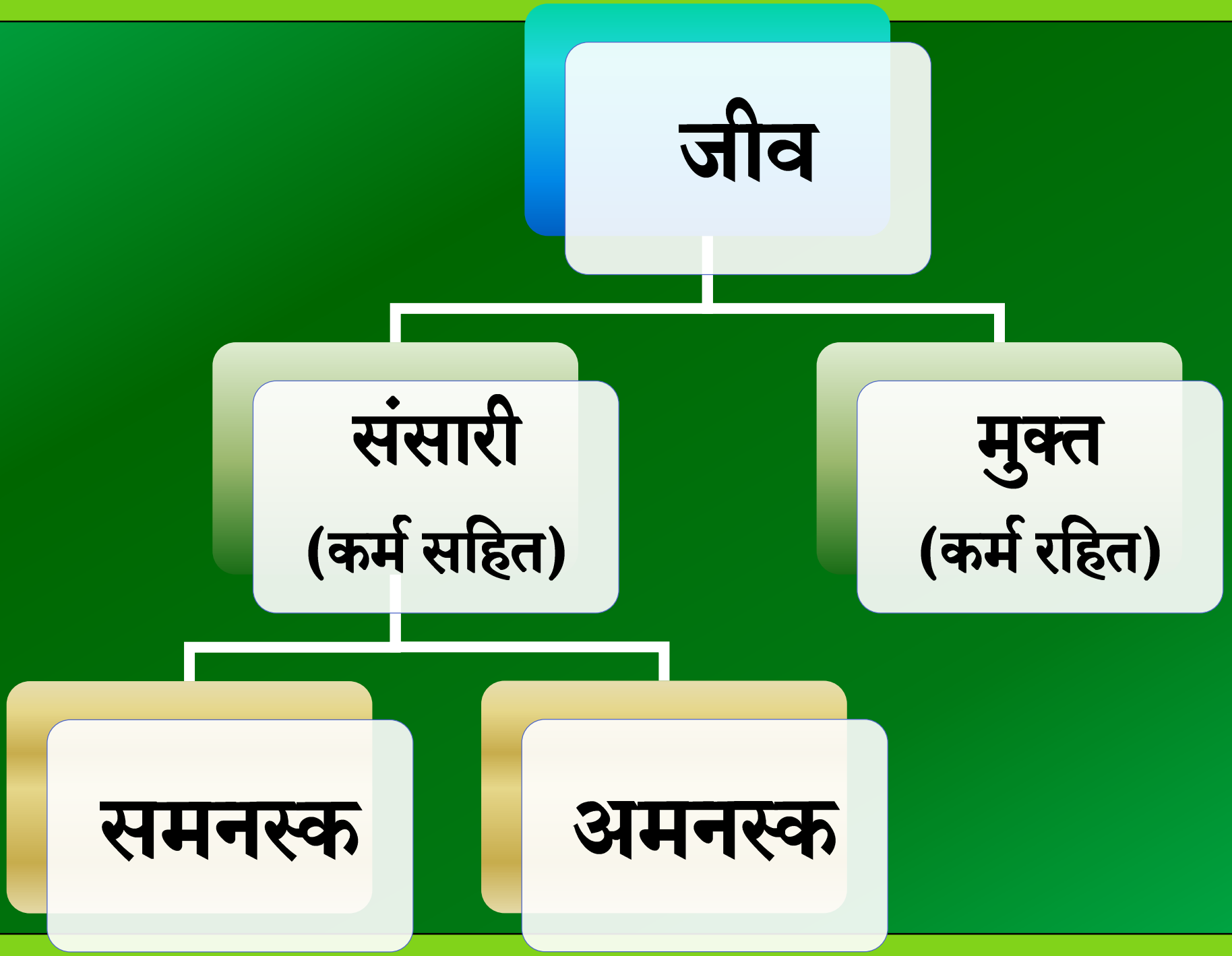
जीव
संसारी
(कर्म सहित)
मुक्त
(कर्म रहित)
समनस्क
अमनस्क

संसारी

संसरण करे अर्थात् जो परिभ्रमण करे

५ परिवर्तन रूप जो परावर्तन करे

हर जीव का संसार उसके अन्दर के मोह राग द्वेष भाव ही हैं

संसार

- 4 गति में परिभ्रमण
- पंच परावर्तन
- जन्म मरण रूप संसार
- मोह राग द्वेष परिणाम

सूत्र में संसारी का ग्रहण पहले क्यों किया है?

संसारी जीवों के बहुत भेद प्रभेद हैं

संसार पूर्वक मोक्ष होता है

संसारी अवस्था प्रत्यक्ष दिखाई देती है जबकि मुक्त अवस्था परोक्ष है, अप्राप्त है |

संसारीणः और मुक्ताः दोनों में बहुवचन अलग अलग क्यों लिया?

संसारी बहुत है और मुक्त जीव भी बहुत है इसे बताने के लिए दोनों ही बहुवचन लिए ।

समनस्क	अमनस्क
❖ मन सहित	❖ मन रहित
❖ चारों गति क जीव	❖ सिर्फ तिर्यंच

☸संसारिणस्त्रसस्थावराः॥12॥

संसारी जीव त्रस और स्थावर के भेद से 2 प्रकार के हैं

☸पृथिव्यप्तेजो वायु-वनस्पतयः स्थावराः॥13॥

पृथ्वी , जल, अग्नि, वायु और वनस्पति ये स्थावर जीव हैं

☸द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः॥14॥

2 इन्द्रिय से लेकर 5 इन्द्रिय तक के जीव त्रस हैं

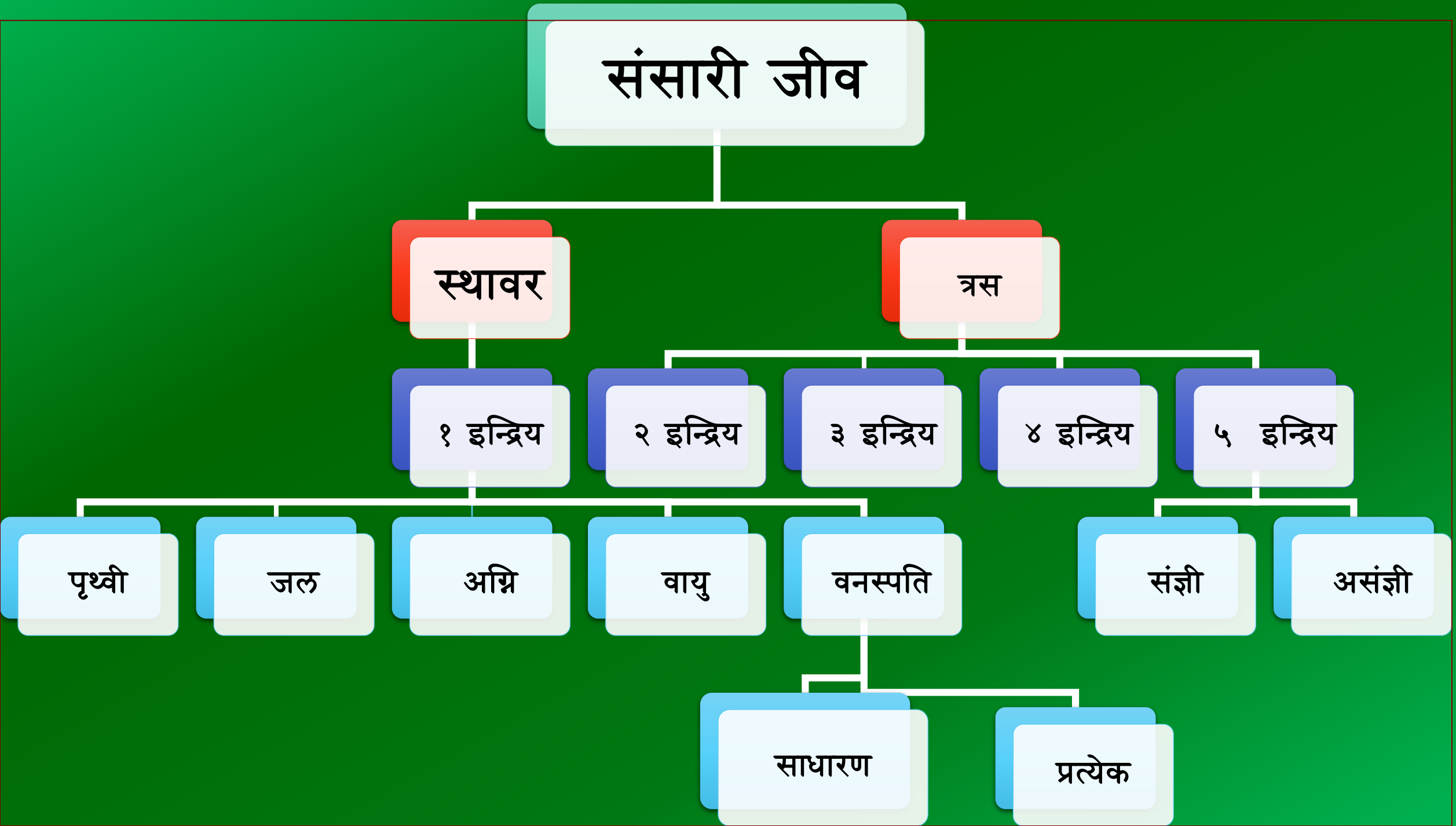
संसारी जीव
स्थावर
त्रस
१ इन्द्रिय
२ इन्द्रिय
३ इन्द्रिय
४ इन्द्रिय
५ इन्द्रिय
पृथ्वी
जल
अग्नि
वायु
वनस्पति
संज्ञी
असंज्ञी
साधारण
प्रत्येक

स्थावर

- पृथ्वी
- जल
- अग्नि
- वायु
- वनस्पति

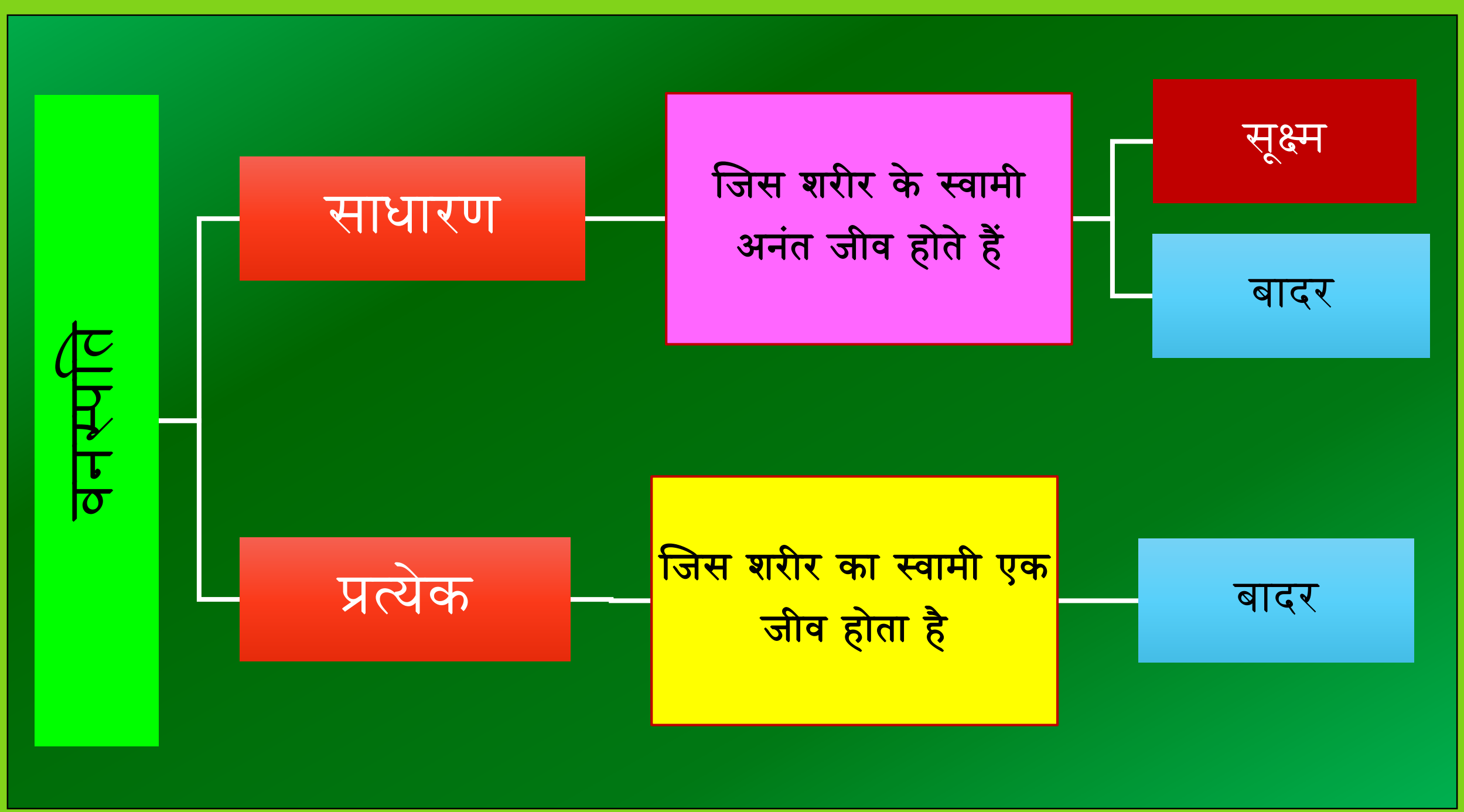
वनस्पति
साधारण
जिस शरीर के स्वामी अनंत जीव होते हैं
सूक्ष्म
बादर
प्रत्येक
जिस शरीर का स्वामी एक जीव होता है
बादर

5 स्थावरों में से प्रत्येक के 4-4 भेद

पृथ्वी	• पृथ्वी सामान्य
पृथ्वीजीव	• विग्रह गति का जीव जो पृथ्वी में जन्म लेने जा रहा है
पृथ्वी कायिक	• पृथ्वी शरीर सहित जीव
पृथ्वी काय	• पृथ्वी शरीर, जिसमे से जीव निकल गया है

☸पञ्चेन्द्रियाणि॥15॥

इन्द्रियाँ 5 होती हैं

☸द्विविधानि॥16॥

वे 2 प्रकार की हैं

☸निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्॥17॥

निवृत्ति और उपकरण द्रव्येन्द्रिय हैं

☸लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्॥18।।

लब्धि और उपयोग भाव इन्द्रिय हैं

इन्द्रिय

द्रव्येन्द्रिय

शरीर नामकर्म के उदय से बननेवाले शरीर के चिह्न-विशेष

भावेन्द्रिय

मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाली विशुद्धि अथवा उस विशुद्धि से उत्पन्न होने वाला उपयोगात्मक ज्ञान

द्रव्येन्द्रिय

निर्वृत्ति

जिन प्रदेशों के द्वारा विषयों को जानते हैं

उपकरण

जो निर्वृत्ति के सहकारी, निकटवर्ती हैं

निर्वृत्ति- जिनके द्वारा रचना की जाती है

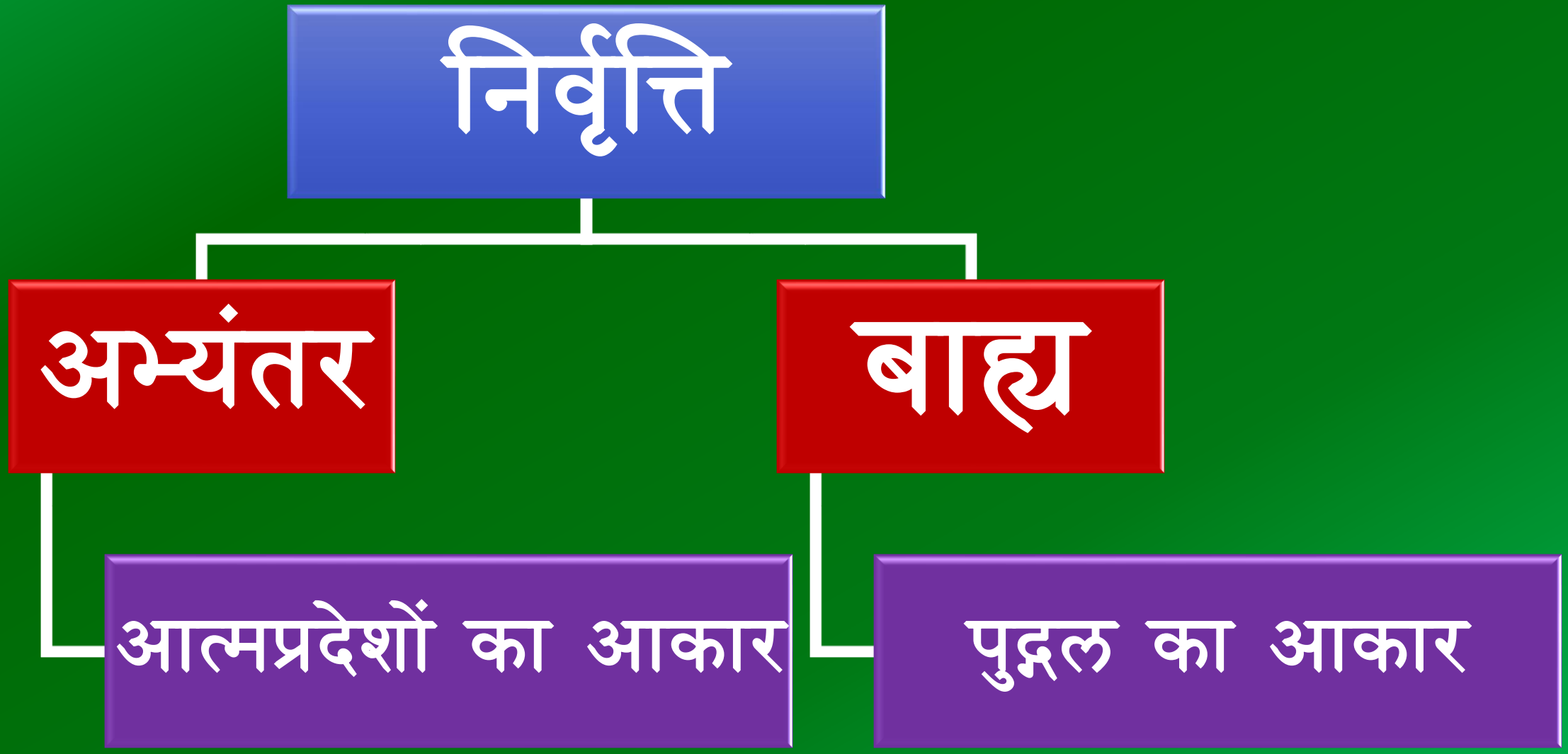

उपकरण-जिसके द्वारा निर्वृती का उपकार किया जाता है

उपकरण

अभ्यंतर

नेत्र में काला, सफेद मंडल

बह्य

नेत्र की पलकें, भौंहें

भावेन्द्रिय

लब्धि

मतिज्ञानावरणादि कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न विशुद्धि, उघाड़

उपयोग

विशुद्धि (लब्धि) से उत्पन्न आत्मा का प्रवर्तनरूप ज्ञान

इन्द्रिय

द्रव्येन्द्रिय

निर्वृत्ति
इन्द्रिया कार रचना

उपकरण
निर्वृत्ति का उपकार करे

भावेन्द्रिय

लब्धि
ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम

उपयोग
चेतना का परिणाम विशेष

ज्ञान की प्रगट प्राप्त शक्ति — लब्धि

इस शक्ति का प्रयोग — उपयोग

इस उपयोग में सहकारी साधन — द्रव्य इन्द्रिय

द्रव्य इन्द्रिय के लिये सहकारी — उपकरण

☸स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि॥19॥

स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण ये 5 इन्द्रियाँ हैं

☸ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः।20॥

स्पर्श, रस,गंध, वर्ण और शब्द ये उनके विषय हैं

इन्द्रिय

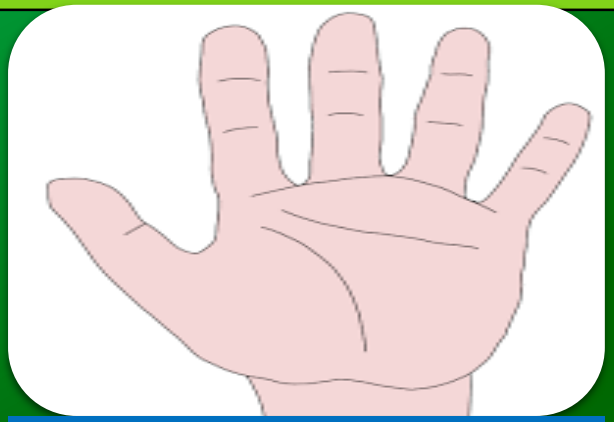

स्पर्शन

रसना

घ्राण

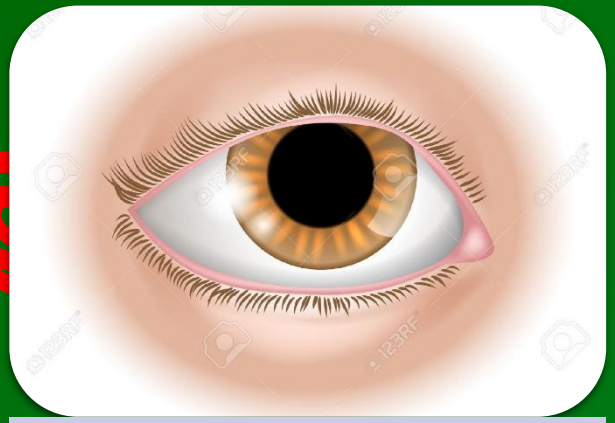

चक्षु

कर्ण

इन्द्रियों के आकार

अर्थ - मसूर के समान चक्षु का,

जव की नाली के समान श्रोत्र का,

तिल के फूल के समान घ्राण का तथा

खुरपा के समान जिह्वा का आकार है और

स्पर्शनेन्द्रिय के अनेक आकार हैं ।।१७१।।

इन्द्रिय	• विषय
स्पर्शन	• ८ प्रकार का स्पर्श
रसना	• ५ प्रकार का रस
घ्राण	• २ प्रकार की गंध
चक्षु	• ५ प्रकार का रूप
कर्ण	• शब्द तथा ७ प्रकार का स्वर

स्पर्श, रस, गंध और वर्ण तो पुद्गल के गुण हैं

आवाज व शब्द पुद्गल की पर्याय है

मन की गणना इन्द्रियों में क्यों नहीं की गई है?

मन अन्य इन्द्रियों के समान नियत स्थानीय नहीं है

तथा उस मन का निमित्त पाकर चक्षु आदि इन्द्रियां विषयों में व्यापार करती हैं

द्रव्य और भावेंद्रियों में से कौन सी इन्द्रिय प्रमाण है?

जो भावेंद्रिय है वही प्रमाण है

क्योंकि स्व-पर को जानने रूप क्रिया में यही साधकतम है,

द्रव्येंद्रिय के उपचार से प्रमणता स्वीकार की जाती है |

यदि भावेंद्रिय ही प्रमाण है तो द्रव्येंद्रिय के इन्द्रिय संज्ञा कैसे दी है?

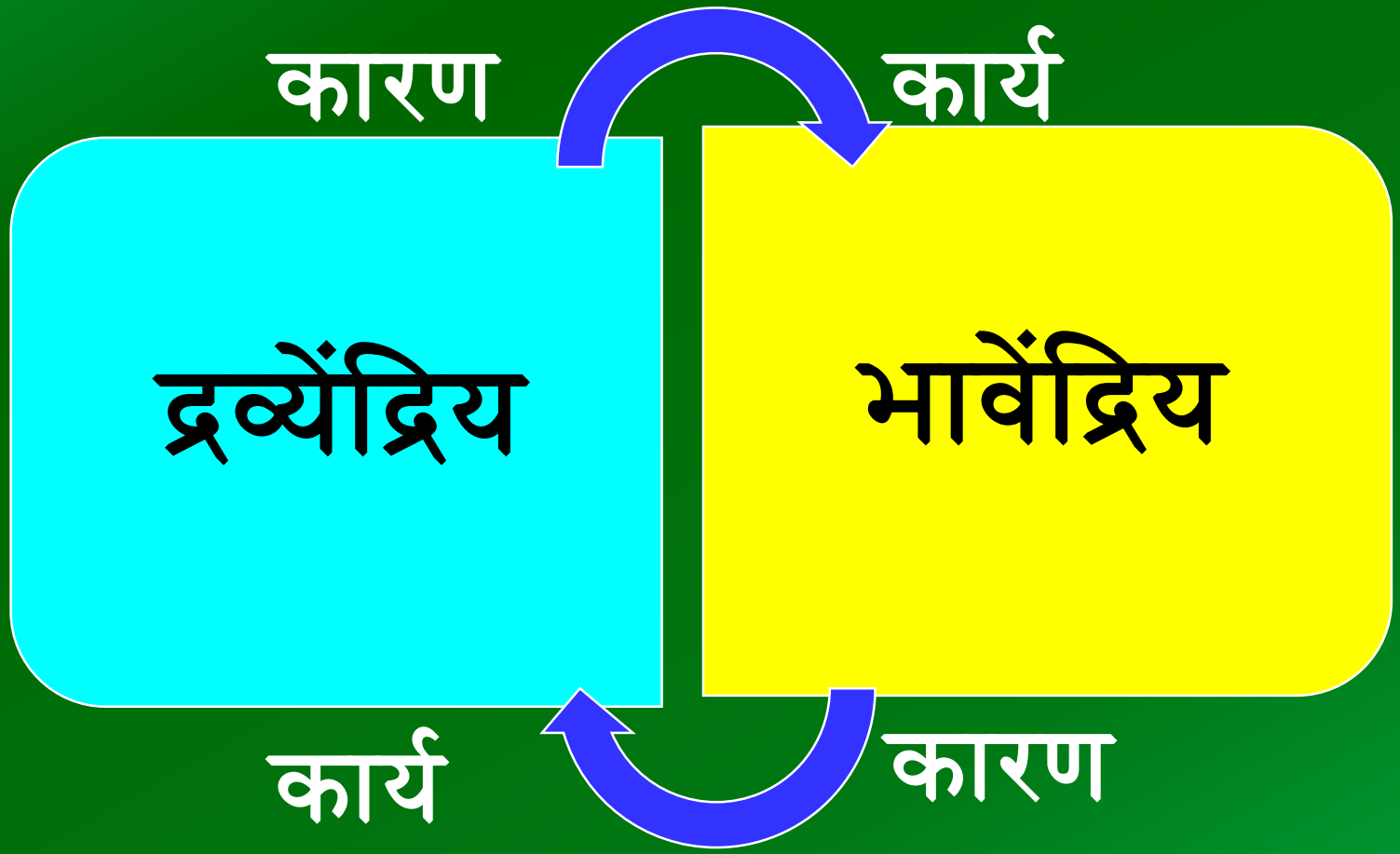

☸इन्द्रियों की सहायता करना ही मन का प्रयोजन है या और भी कुछ प्रयोजन है? यह अगले सूत्र में बताते हैं-

- श्रुतमनिन्द्रियस्य॥21॥
- श्रुत मन का विषय है

श्रुतज्ञान का विषयभूत पदार्थ

श्रुत श्रोत्रेंद्रिय का विषय है वह मन का विषय कैसे हो सकता है?

- श्रुत को श्रोत्रेंद्रिय का विषय मानने पर मतिज्ञान का प्रसंग आएगा,
- जबकि मतिज्ञान होने के बाद होने वाला चिन्तन वह श्रुत है और उसे यहाँ लिया गया है

श्रुत ज्ञान से जाने हुए पदार्थों को मन जानता है तो क्या मतिज्ञान से जाने हुये पदार्थों को मन जानता है की नहीं?

- मन के जानने योग्य श्रुत ही है ऐसा नहीं है

श्रुत ज्ञान मन के निमित्त से ही होता है या अन्य इन्द्रियों के निमित्त से भी होता है?

☸श्रुत ज्ञान केवल अनिन्द्रिय (मन) के निमित्त से ही होता है

☸वनस्पत्यन्तानामेकम्॥22॥

पृथ्वीकाय से लेकर वनस्पतिकाय तक के जीवों की एक स्पर्शन इन्द्रिय होती है

☸कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि॥23॥

कृमि, चींटी, भँवरा और मनुष्य आदि के एक एक इन्द्रिय अधिक होती है

भेद

१ इन्द्रिय

- स्पर्शन

२ इन्द्रिय

- स्पर्शन,
- रसना

३ इन्द्रिय

- स्पर्शन,
- रसना,
- घ्राण

४ इन्द्रिय

- स्पर्शन,
- रसना,
- घ्राण,
- चक्षु

५ इन्द्रिय

- स्पर्शन,
- रसना,
- घ्राण,
- चक्षु,
- कर्ण

संज्ञिनः समनस्काः॥24॥

☸मन सहित जीवों को संज्ञी कहते हैं ।

मन

भाव मन

- हित अहित का विचार,शिक्षा और उपदेश ग्रहण करने की शक्ति सहित ज्ञान विशेष

द्रव्य मन

- हृदय स्थान में ८ पंखुड़िओं वाले कमल के आकार समान पुद्गल पिण्ड

संज्ञी क्या कर सकता?

- हित का ग्रहण और अहित का त्याग
- इच्छापूर्वक हाथ पैर आदि चलाने की क्रिया
- वचन अथवा चाबुक आदि के द्वारा उपदेश ग्रहण कर सके
- श्लोक आदि का पाठ - उत्तर दे सके
- उसका जो नाम रक्खा गया हो बुलाने पर आ सके, उन्मुख हो

संज्ञी

असंज्ञी

नारकी

मनुष्य

देव

संज्ञी पचेंद्रिय तिर्यंच

1,2,3,4 और 5 इन्द्रिय असंज्ञी

केवली भगवान संज्ञी है की असंज्ञी?

- उनके द्रव्य मन पाया जाता है किन्तु उसका व्यापार और उस सम्बंधित कर्म का अभाव हो गया है इसीलिए वे संज्ञी एवं असंज्ञी दोनों ही नहीं है ।

जिस समय जीव पूर्व शरीर को छोड़कर आया शरीर
धारण करने जाता है
तब उसके मन तो रहता नहीं है
फिर वह कैसे गमन करता है?
इसके समाधान के लिए अगला सूत्र कहते हैं-

विग्रह-गतौ कर्म-योगः॥25॥

☸विग्रह गति में कार्माण काय योग होता है ।

विग्रह गति

विग्रह = देह,

- शरीर के लिए जो गति होती है उसे विग्रह गति कहते हैं ।

वि+ग्रह = विरूद्ध ग्रहण,

- जिस अवस्था में नोकर्म पुदगलों का ग्रहण नहीं होता वह विग्रह है और ऐसी गति विग्रह गति होती है ।

विग्रह = मोड़ा,

- मोड़े वाली गति को विग्रह गति कहते हैं ।

कर्मयोग

कार्माण वर्गणाओं के ग्रहण के निमित्त से आत्म प्रदेशों में परिस्पन्दन होता है जिसे कर्म योग कहते हैं |

यह योग सिर्फ विग्रह गति में ही पाया जाता है

- विग्रह गति में जीव इस कर्म योग के द्वारा ही जीव नवीन कर्मों को ग्रहण करता है और
- मृत्यु स्थान से अपने जन्म लेने के स्थान तक जाता है ।

☸अनुश्रेणिः गतिः॥26॥

विग्रह गति में जीव और पुद्गलों की गति आकाश की पंक्ति के अनुसार होती है ।

☸अविग्रहा जीवस्य॥27॥

मुक्त जीव की गति मोड़े रहित होती है ।

अनुश्रेणि गति

आकाश क प्रदेशों को पंक्ति क अनुसार गमन

अनुश्रेणि गति

- मुक्त जीव
  - सिर्फ ऋजुगति
- संसारी जीव
  - चारों प्रकार को गति

यहाँ तो जीव का अधिकार है तो पुद्गल का ग्रहण क्यों किया?

- आगे ‘अविग्रहा जीवस्य’ सूत्र में जीव का उल्लेख किया है इससे पता चलता है की यहाँ सिर्फ जीव की ही गति नहीं बाते है ।

विशेष

- सभी जीव और पुद्गल की गति श्रेणी के अनुसार नहीं होती है, मुक्त जीव और शुद्ध पुद्गल परमाणु की गति अनुश्रेणी होती है ।
- शेष के लिए कोई नियम नहीं है ।

प्र. सूत्र 27 में मुक्त जीव की गति बताई है यह कैसे ज्ञात हुआ?

- अगले सूत्र में 'संसारीण:' शब्द का प्रयोग किया जिससे ज्ञात हुआ की इस सूत्र में मुक्त जीव की गति बताई है ।

विग्रहवती च संसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः॥28॥

- संसारी जीवों की चौथे समय से पहले विग्रहगति(मोड़े वाली) होती है और बिना मोड़े वाली गति भी होती है

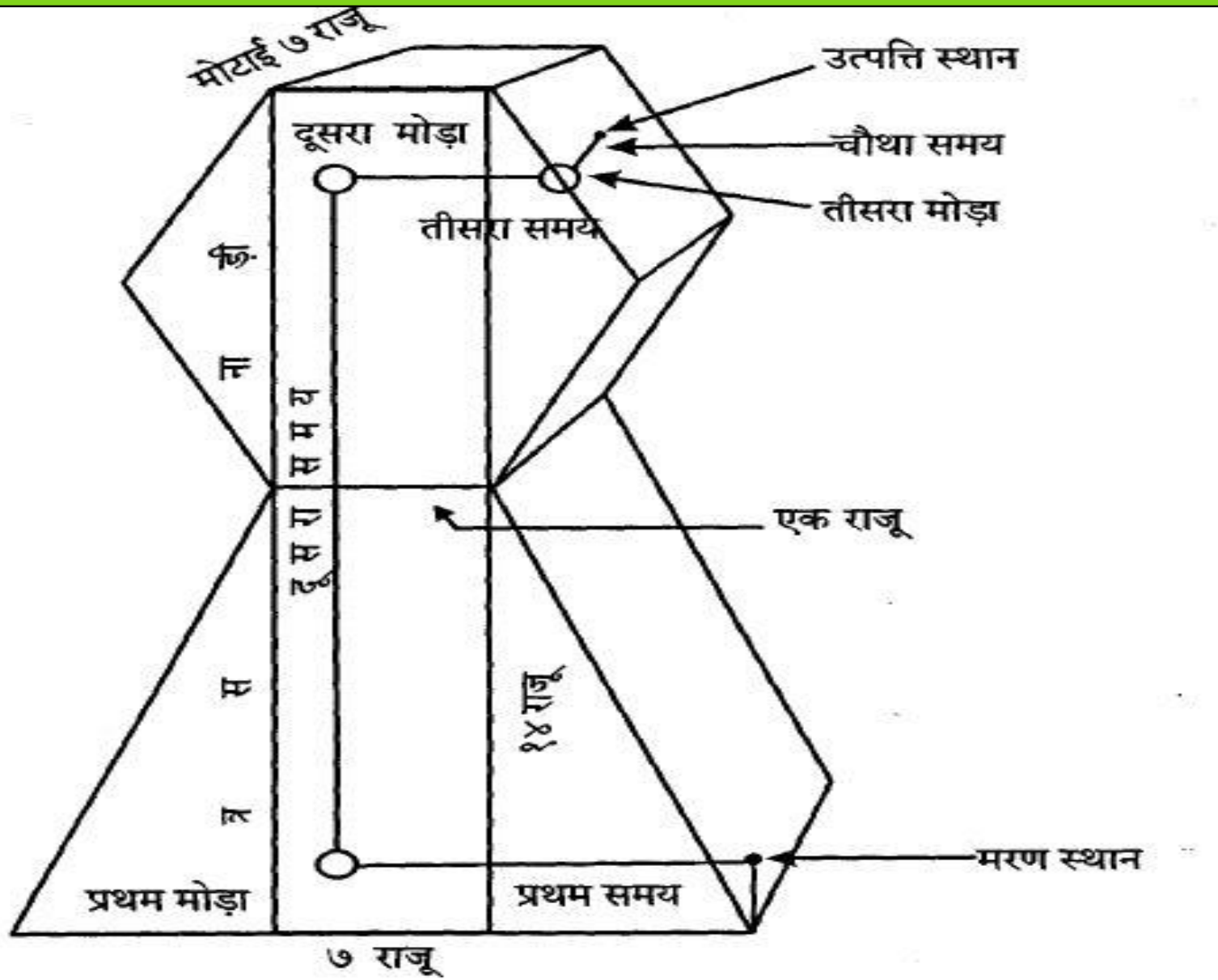

विग्रह गति में मोड़ा व समय

आहार

औदारिकादि तीन शरीर तथा छः पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों के ग्रहण करने को आहार कहते हैं।

अविग्रहा

- ऋजुगति/इषु गति

विग्रहवती

- पाणिमुक्ता
- लांगलिका
- गौमूत्रिका

ऋजुगति/इषु गति

मोड़ा	समय	अनाहारक काल
सीधी बिना मोड़	1 समय	अनाहारक नहीं होता

विशेष – कितनी भी दूरी हो यदि जीव, पुद्गल बिना मोड़े की गति कर रहा है तो उसमे एक ही समय लगेगा

पाणिमुक्ता

1 मोड़ा आहारक

मोड़ा	समय	अनाहारक काल
1 मोड़ा	2 समय	1 समय

लांगलिका

मोड़ा	समय	अनाहारक काल
2 मोड़ा	3 समय	2 समय

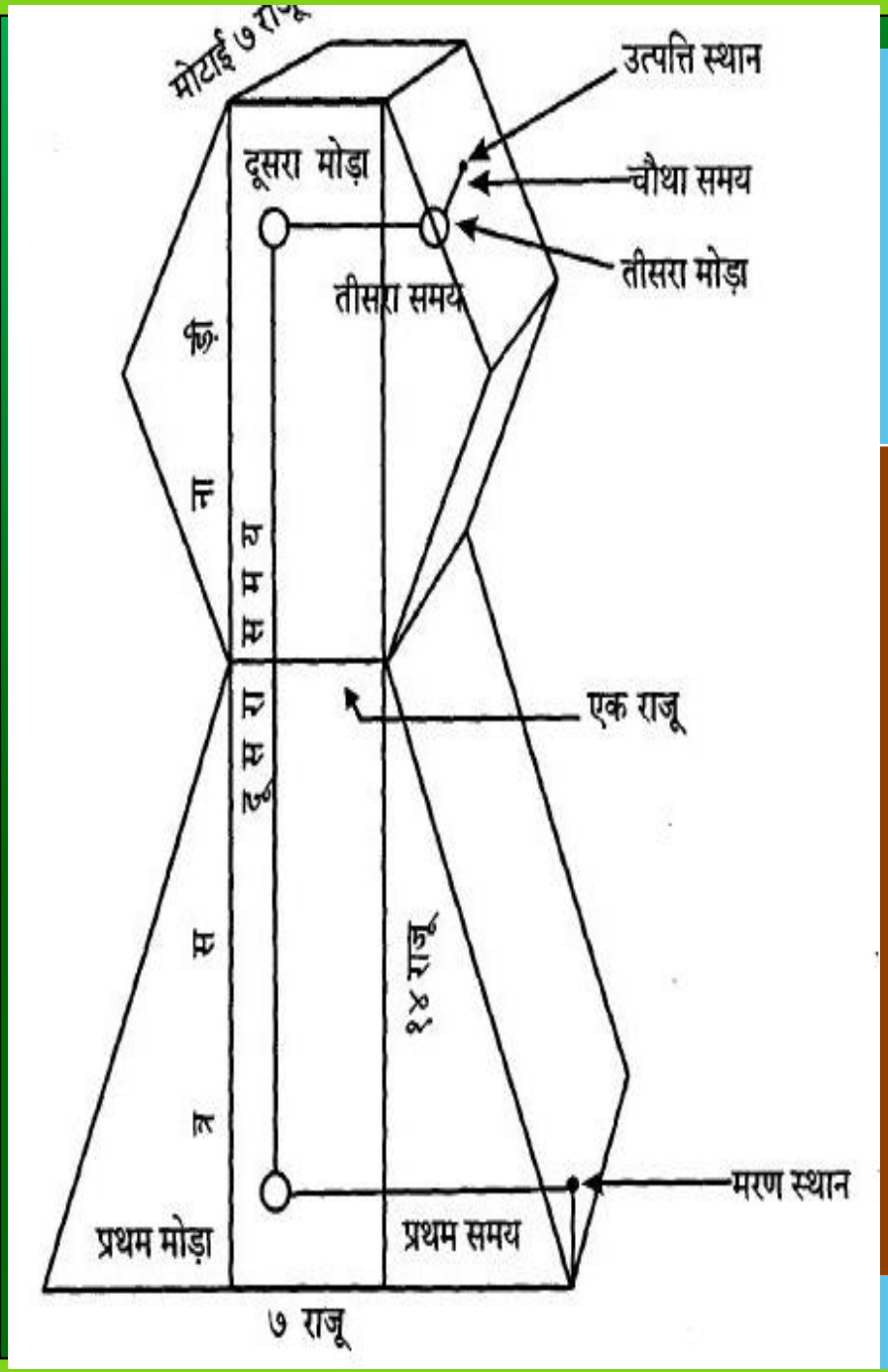

गौमूत्रिका

मोड़ा	समय	अनाहार क काल
3 मोड़ा	4 समय	3 समय

एकसमयाऽविग्रहा॥29॥

- बिना मोड़े वाली गति में एक समय लगता है, इसी को ऋजुगति भी कहते हैं वह विग्रहगति नहीं होती है ।

एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः॥30॥

☸विग्रहगति में जीव एक समय, दो समय अथवा 3 समय तक अनाहारक रहता है

सम्मूर्छनगर्भोपपादा जन्म॥31॥

☸जन्म 3 प्रकार का है- सम्मूर्छन, गर्भ, उपपाद ।

जन्म

पूर्व शरीर का त्याग कर नये शरीर का ग्रहण करना

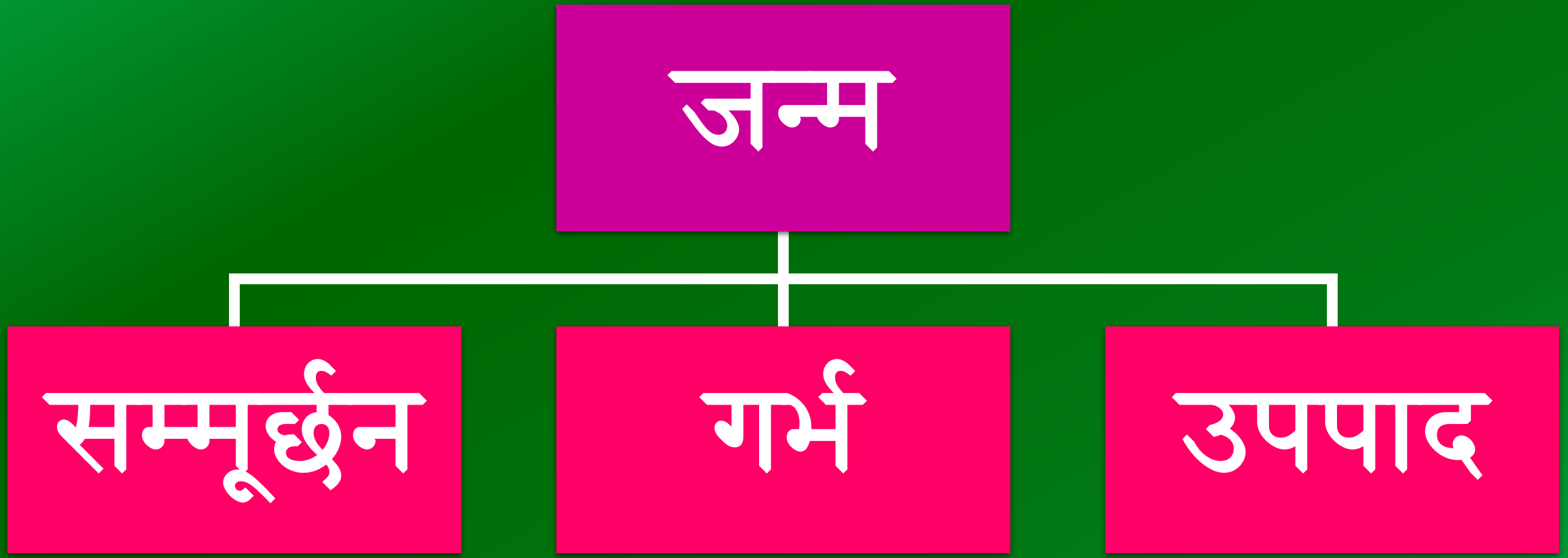
जन्म
सम्मूर्छन
गर्भ
उपपाद

गर्भ	• माता पिता के रज-वीर्य से उत्पत्ति होना
उपपाद	• संपुट शय्या या उष्ट्रादि मुखाकार योनि में अंतर्मुहूर्त काल में ही जीव का उत्पन्न होना
सम्मूर्छन	• सब ओर से परमाणु ग्रहण कर शरीर की रचना होना

☸जरायुजाण्डजपोतानां गर्भः॥33॥

☸जरायुज, अंडज और पोत इन 3 प्रकार के प्राणियों के गर्भ जन्म होता है

☸ देव-नारकाणामुपपादः॥34॥

☸देव और नारकियों का उपपाद जन्म होता है

☸शेषाणां सम्मूर्छनम्॥35॥

☸शेष जीवों का सम्मूर्छन जन्म होता है

गर्भ जन्म के 3 प्रकार

पोत

- योनि से निकलते ही चलना आदि की सामर्थ्य से संयुक्त है वह जीव पोत कहलाता है।
- सिंह, नेवला आदि

जरायुज

- प्राणी के शरीर के ऊपर जाल समान आवरण - मांस, लहू जिसमें विस्तारूप पाया जाता है ऐसा जो जरायु, उसमें उत्पन्न जीव जरायुज कहलाता है।
- गाय, हाथी आदि

अंडज

- शुक्र, लहूमय तथा नख के समान कठिन आवरण सहित, गोल आकार का धारक वह अण्ड, उसमें उपजने वाला जीव अंडज कहलाता है।
- चील, कबूतर आदि

जन्म भेद स्वामी

सम्मूर्छन

- एकेंद्रिय
- विकलेन्द्रिय
- पंचेन्द्रिय तिर्यंच
- लब्धि अपर्याप्त मनुष्य

गर्भ

- पोत
- जरायुज
- अंडज

उपपाद

- देव
- नारकी

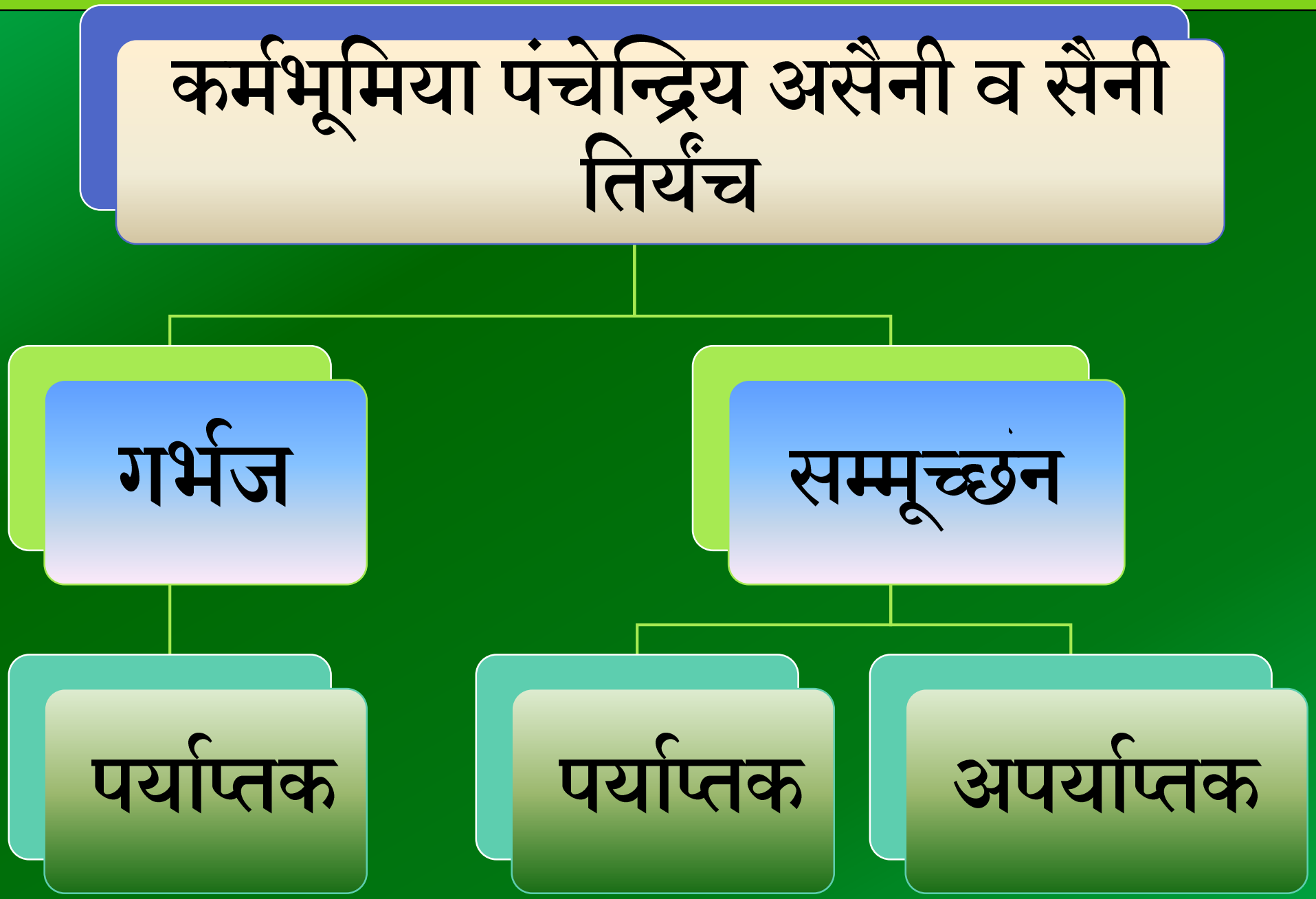

कर्मभूमिया पंचेन्द्रिय असैनी व सैनी तिर्यंच

- गर्भज
  - पर्याप्तक
- सम्मूर्च्छन
  - पर्याप्तक
  - अपर्याप्तक

सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैक-शस्तद्योनयः॥32॥

- सचित्त, शीत, संवृत्त इनके उल्टे अचित्त, उष्ण, विवृत और इन तीनों के मिश्र अर्थात् सचित्ताचित्त, शीतोष्ण और संवृतविवृत ये योनी के 9 भेद हैं

योनि

जीव का उपजने का स्थान वह योनि है।

मिश्ररूप होकर औदारिकादि नोकर्मवर्गणारूप पुद्गलों से सहित बंधता है जीव जिसमें, वह योनि है।

योनि

- आकृति
  - उत्पत्ति स्थान की आकृति के आधार पर भेद
- गुण
  - उत्पत्ति स्थान के स्पर्शादि गुण के आधार पर भेद

आकार योनि

शंखावर्त योनि	गर्भ नियम से विवर्जित है, गर्भ रहता ही नहीं है
कूर्मोन्नत योनि	तीर्थंकर वा सकलचक्रवर्ती वा अर्धचक्रवर्ती, नारायण, प्रतिनारायण वा बलभद्र उपजता है
वंशपत्र योनि	अवशेष जन उपजते हैं, तीर्थंकरादि नहीं उपजते

गुण योनि

सचित्त	अचित्त	सचित्ता चित्त	शीत	उष्ण	शीतोष्ण	संवृत	विवृत	संवृत विवृत

सचित्त

आत्मा के चैतन्य रूप परिणाम विशेष को चित्त कहते हैं |

जो चित्त के साथ रहता है वह सचित्त कहलाता है |

जन्म और योनि में क्या भेद है?

- योनि आधार और जन्म आधेय है ।

सचित्त	• चेतन के साथ जो रहे, वे सचित्त हैं अर्थात् जीव सहित योनि • जैसे आलू, गाजर आदि
अचित्त	• चेतन से रहित योनि • जैसे गेहूँ के बीज
सचित्ताचित्त	• चेतन और पुद्गल सहित उत्पत्ति स्थान • जैसे माता का गर्भ
शीत	• जिन पुद्गलों में शीत स्पर्श प्रकट है
उष्ण	• जिन पुद्गलों में उष्ण स्पर्श प्रकट है
शीतोष्ण	• शीत और उष्ण ऐसे उभयरूप पुद्गल स्कंध

संवृत	• जो पुद्गल स्कंध देखने में नहीं आते, जिनका आकार गुप्त है
विवृत	• जो पुद्गल स्कंध प्रकट आकार को लिए है, देखने में आता है
संवृतविवृत	• कुछ प्रकट और कुछ अप्रकट पुद्गल स्कंध

प्रत्येक जीव के ऊपर नौ में
से हर समूह में से
एक, अर्थात् कुल मिलाकर
3 योनि नियम से होती हैं।

जन्म प्रकार में सचित्त आदि योनियाँ

	सचित्त	अचित्त	सचित्ताचित्त
उपपाद	✗	✓	✗
गर्भ	✗	✗	✓
सम्मूर्छन	✓	✓	✓

जन्म प्रकार में शीत आदि योनियाँ

	शीत	उष्ण	शीतोष्ण
उपपाद	✓	✓	✗
गर्भ	✓	✓	✓
सम्मूर्छन	✓	✓	✓

जन्म प्रकार में संवृत आदि योनियाँ

	संवृत	विवृत	संवृत-विवृत
उपपाद	✓	✗	✗
गर्भ	✗	✗	✓
सम्मूर्छन	✓	✓	✗
-एकेन्द्रिय	✓	✗	✗
-विकलेन्द्रिय	✗	✓	✗
-पंचेन्द्रिय	✗	✓	✗

किस योनि में कौन जीव जन्म लेता है ?

जीव	योनि		
देव व नारकी	अचित्त	शीत व उष्ण	संवृत्त
गर्भज—मनुष्य व तिर्यंच	सचित्ताचित्त	तीनों प्रकार	संवृतविवृत
सम्मूर्च्छन मनुष्य व पंचेन्द्रिय तिर्यंच	तीन प्रकार (सचित्त, अचित्त व मिश्र)		विवृत
विकलेन्द्रिय			
एकेन्द्रिय (पृथ्वी, वायु, प्रत्येक वनस्पति)			संवृत
अग्नि		उष्ण	
जल		शीत	
साधारण वनस्पति	सचित्त	तीनों प्रकार	

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎:9406682880